MAHARASHTRA STATE COUNCIL OF EXAMINATION, PUNE

Government Commercial Certificate Examination

6 JULY, 2018

[Time : 16-30]

(Total Marks for Sections I and II : 100)

HINDI TYPEWRITING

(40 Words Per Minute)

SECTION - II

(Time Allowed : 7 Minutes)

हिंदी टंकलेखन

(४० शब्द प्रति मिनट)

विभाग - २

(समय : ७ मिनट)

सूचना : निम्नांकित गद्यखंड को दोहरे अंतर में टंकलिखित करें । गद्यखंड को दुबारा टंकलिखित न करें। बायीं ओर १५ स्पेस का हाशिया (मार्जिन) छोडिए ।

[अंक : ४०]

आलोचना करना जितना आसान होता है । आलोचना सुनने को भी उतना सरल बनाया जाए । संसार में लोग या तो आपकी प्रतिष्ठा की आलोचना करते है या चरित्र की । जब प्रतिष्ठा की आलोचना होती है तो हम खुद को समझा लेते हैं कि लोग हमसे जल रहे हैं और हमारी प्रतिष्ठा हमें सरल बनाने की जगह अहंकारी बना देती है । अहंकारी व्यक्ति दूसरों के प्रति लापरवाह हो जाता है । चरित्र की आलोचना होने पर व्यक्ति भीतर से हिल जाता है । जब कोई हमारे चरित्र की आलोचना करे तो बचने की कोशिश न करें । लोगों का ध्यान हमारी ओर क्यों आया है इसका कारण अपने भीतर ढूंढें । गलत से गलत आलोचना भी भीतर के मामले में सही इशारा कर जाती है । एक प्रयोग करें, जब प्रतिष्ठा की आलोचना हो तो विनम्रता और सादगी अपनाएँ और जब चरित्र की आलोचना हो तो तुरंत भगवान से जुड़ जाएँ । संसार के लिए कहा गया है, जो सरके वह संसार । एक ओर अर्थ बोला गया है सवारी यानी संसार । इसी लिए आप देखिए, हर आदमी सरकने के लिए किसी-न-किसी पर सवार है । कोई धन पर, कोई बल पर, कोई पद पर, कोई यौवन पर ये सब सवारियाँ हैं । और इसी लिए आपकी भी किसी पर सवार देखकर लोग आलोचनात्मक टिप्पणी जरूर करेंगे, लेकिन जैसे ही आप भगवान से जुड़ जाते हैं, आपकी सवारी का रूप बदल जाता है । परमात्मा इतना सुंदर है कि बुरी-से-बुरी आलोचना का भी भाव बदल जाता है और आप आलोचना को स्वस्थ रूप में लेने लगते हैं । परमात्मा का नित्य स्मरण करने से अपने मन की भी ताकत बढ़ जाती है, और अच्छे काम करने से आनंद मिल जाता है । यह बहुत ही बड़ी और मनःशांति की बात है । जीवन का यही रहस्य है ।